International Journal of Jyotish Research: 2024; 9(2): 123-128

International Journal of Jyotish Research
(वेदचक्षु)

ISSN: 2456-4427
Impact Factor: RJIF: 5.11
Jyotish 2024; 9(2): 123-128
© 2024 Jyotish
www.jyotishajournal.com
Received: 20-08-2024
Accepted: 24-09-2024

राम भज अग्रवाल
श्री महर्षि वैदिक ज्योतिष कॉलेज, अरिहंत प्लाजा, उदयपोल, उदयपुर, राजस्थान, भारत

डॉ. सैफाली बंसल
श्री महर्षि वैदिक ज्योतिष कॉलेज, अरिहंत प्लाजा, उदयपोल, उदयपुर, राजस्थान, भारत

Correspondence
राम भज अग्रवाल
श्री महर्षि वैदिक ज्योतिष कॉलेज, अरिहंत प्लाजा, उदयपोल, उदयपुर, राजस्थान, भारत

भावनातमक असंतुलन और अंकविज्ञान

राम भज अग्रवाल, सैफाली बंसल

सारांश
अंकविज्ञानं एक विज्ञानं की श्रेणी में आता है और यह मानव जीवन के हर पहलु को प्रभावित करता है और इसका असर किसी भी मानव के पुरे जीवन काल में देखा जा सकता है । अंकविज्ञान के मानव जीवन पर प्रभाव पड़ने के शोध पहले से बहुतायत में मौजूद है । अंकविज्ञान मानवो के जीवन को सही तरह से जीने के लिए जिस प्रकार एक यन्त्र का काम करता है उसी प्रकार से "भावनात्मक असंतुलन और अंकविज्ञान" पर शौध करना भी अति आवशयक जान पड़ता है । हर एक अंक का ग्रह से सम्बन्ध है और उस ग्रह या अंक का मानव पर गहरा असर होता है तो यह जानना भी अति आवशयक है कि क्या मानव जब कभी भी अपने आप में भावनात्मक असंतुलन होते हुए देखता है तो उसके जीवन पर किस अंक या किस ग्रह का असर होता है । कारणों का पता लगाने से उस पर होने वाले दुष्प्रभावों को भी रोकना क्या संभव है इस का भी निवारण किया जायेगा ।
"भावनात्मक असंतुलन और अंक विज्ञानं "शौध के कार्य की प्रकर्ति में हम विभिन्न आयु वर्ग के मानवो का व्यक्तिगत लेखा जोखा इक्कट्ठा करने के पश्चात पूर्ण रूप से उसकी अंक विज्ञानं के अनुसार अध्यन करने के बाद इस शौध को एक अंजाम तक पहुंचाया जायेगा । प्रत्येक व्यक्तिगत अनुभवों को इक्कठा करने के पश्चात उसको अंकविज्ञान के "लोशु ग्रिड " के द्वारा अध्यन करने के पश्चात यह ज्ञात्त करने की कोशिस की जाएगी कि क्या - क्या ज्यादातर व्यक्तिगत जानकारियों में सामान्यतया किस ग्रहो या अंको का असर पाया गया है ।
बहुत सी व्यक्तिगत उपलब्ध जानकारियों के अनुसार उनमे भावनात्मक असंतुलन नहीं पाया जाता है तो यह भी इस विषय के शौध का एक मुख्य आधार होगा । जिन केस स्टडी में भावनात्मक असंतुलन नहीं पाया गया है तो उन पर कौन से ग्रह या अंक अपना प्रभाव रखते है जिन के कारण उन में भावनात्मक - असंतुलन नहीं पाया गया है तो उन पर कौन से ग्रह या अंक अपना प्रभाव रखते है जिन के कारण उन में भावनात्मक - असंतुलन नहीं पाया गया एवं वह एक ससक्त व्यक्तितत्व के मालिक है । ऐसे उधाहरणो में हम याग भी ज्ञात करने कि कोशिस करेंगे कि उन पर किस-किस अंक का प्रभाव अनुकूल है और किस - किस अंक का प्रभाव प्रतिकूल है ।
मानशिकअसंतुलन और अंकविज्ञान पर शोध से यह ज्ञात होता है कि इस विकार को अंकविज्ञान कि मदद से दूर किया जा सकता है।

कूटशब्दः अंक, गृह, मानशिक अवस्था, मानशिक संतुलन/असंतुलन, ग्रहों का उपाय

1. प्रस्तावना
"भावनात्मक असंतुलन और अंक विज्ञानं " के बारे में शौध के कार्य क्षेत्र को वैसे तो किसी भी क्षेत्र या देश - विदेश कि सिमा में नहीं बांध सकते है। यह एक पुरे ब्रह्माण्ड की धरोहर है और एक विस्तारित, अन्नंत, विशाल वैज्ञानिक खोज है। अंक विज्ञानं द्वारा मानव अपने हर पल को नियंत्रित करने में सक्षम है। अंक विज्ञानं के द्वारा आज पूरा विश्व इस वैज्ञानिक ज्ञान द्वारा लाभान्वित हो रहा है और अपने भबिस्य को उज्जवल बना रहा है।
आज मानव अंक विज्ञानं के माध्यम से अपने बारे में समस्त अपनी कमजोरियों और समस्त शक्तियो के बारे में जानकारियां प्राप्त कर अपने जीवन को सफलता पूर्वक जीते है और अंक विज्ञानं का लाभ प्राप्त करते है। पुरे भारत के लोगो में से कुछ लोगों का एक सर्वे द्वारा उनकी व्यक्तिगत जानकारियां एकत्रतित कीजाएगी और उनका विस्तारपूर्वक अध्यन किया जायेगा। विस्तारपूर्वक अंक विज्ञानं के अनुसार अध्यन करने के पश्चात यह शौध किया जायेगा कि किस व्यक्ति के क्या लक्षण है और उस पर किस अंक या गृह का प्रभाव अनुकूल है या किस अंक या गृह का प्रभाव प्रतिकूल है।
प्रस्तावित शौध कार्य का महत्वपूर्ण क्षेत्र यह भी होगा कि जब मानव अंक विज्ञानं का अपने जीवन में इतना ज्यादा दखल पता है जैसे कि बच्चा जब जन्म लेता है तो एक अंक उसके साथ आ जाता है जन्मदिन के रूप में, उसके हस्पताल में जिस बिस्तर पर वह रहता है, उसका भी रक अंक होता है फिर कोनसी तारीख को उसने पहला कदम उठाया, कोनसी तारीख को वह स्कूल गया इत्यादि। इन सभी कार्यो के साथ एक अंक जुड़ा होता है और यह अंक विज्ञानं उसके अंतकाल तक चलता रहता है।

इसके अलावा भी वह किस नंबर के घर में रहता है, किस नंबर का वाहन इस्तेमाल करता है। ये सभी अंक उसके जीवन - स्त्र को उप्पर उठाने में योगदान देते रहते है। इसी प्रकार जब मनुस्य अपने जीवन काल में अपने आपको भावनात्मक रूप से असंतुलित पता है तो उस समय भी क्या कोई अंक अपना योगदान दे रहा होता है? अगर कोई अंक या गृह अपना योगदान दे रहे होते है तो उस अंक या गृह की पहचान करना और गृह या अंक के अनुसार मनुष्य अपने जीवन में कुछ सुधार करके उस भावनात्मक असंतुलन के समय को किस तरह से भावनात्मक संतुलन के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है? प्रस्तावित शौध में यह भी शौध का क्षेत्र होगा कि क्या मानव के जीवन काल में भावनात्मक असंतुलन का समय आये ही नहीं, जब ग्रहो का या अंको के प्रभाव को पहचान लिया जायेगा तो क्या ऐसा भी मुमकिन है कि आने वाले समय में मनुष्या यह जान पाए कि उसका भावनात्मक असंतुलन का समय कौन से साल में आने वाला है तो अमुक गृह या अंक का उपाय करके उस समय को टाला जा सकता है।

प्रस्तावित शौध कार्य का महत्वपूर्ण क्षेत्र यह भी होगा कि जिस प्रकार अंक विज्ञानं मनुष्य के जीवन में हर पल दखल देता रहता है क्या उसी प्रकार भावनात्मक असंतुलन के समय भी अंक विज्ञानं का या किसी अंक या गृह का योगदान मनुष्य को असंतुलन की अवस्था में ले जाने का भी होता है।

प्रस्तावित शौध कार्य का एक क्षेत्र एक विशाल क्षेत्र मालूम पड़ता है जैसे - जैसे शौध कार्य आगे बढ़ता जायेगा तो उसका क्षेत्र भी आगे बढ़ता जायेगा। चूँकि इस प्रकार के शोद पर मेरी जानकारी के अनुसार कोई शोद नहीं हुआ है इसलिए इसके शौध में अशीम सम्भावनाये होने के लक्षण दिखाई देते है।

उपरोक्त व्याख्या के अनुसार अंकविज्ञान कि मदद से जो शोध किया गया उसका एक उदाहरण यहाँ पर दिया जा रहा है।

1.1 उदाहरण --- 1

जन्म दिवस की पूर्ण तारीख :- 17-06-1963
स्तिथि :- बहुत ज्यादा भावुक
कारण :- परिवार के सदस्यों का व्यव्हार क्या होता है :- अपने आप को नुकसान पहुंचना
कहां रहते है :- मेट्रो शहर में कैसे सँभालते है
दवाइयों से 17-06-1963 मूलांक - 8
भग्यांक – 6/33
मास्टर अंक -33
जीवनांक - 6
मूलांक - भग्यांक = 8:6 मूलांक भग्यांक का समन्वय प्रतिशत 60
मेन्टल प्लेन --- 33%
हार्ट प्लेन ----- 66%
प्रैक्टिकल प्लेन ---100%
विज़न प्लेन ---- 66%
विल पावर प्लेन –66%,
एक्शन प्लेन –66%
राज योग प्लेन –33%
राज योग सिल्वर प्लेन –33%

1.2 मूलांक 8: के जातक शनि गृह द्वारा प्रभावित होते है। जो कि एक मजबूत गृह माना जाता है और यह गृह नैतिक कार्यों को करने के लिए मनुष्य को प्रेरित करता है। यह गृह अनैतिक कार्यों को कभी भी पसंद नहीं करता है। जब गृह शनि या अंक 8 का प्रभाव शुभ होता है तो मनुष्य सभी नैतिक कार्यों को करने के लिए प्रेरित होता रहता है और अशुभ होने पर अनैतिक कार्य, नशीले पदार्थों का सेवन आदि करने को प्रेरित होता है। मूलांक 8 के जातक कई प्रतिभाओं से संपन्न होते है और किसी को नुकसान नहीं पहुंचाते, मेहनती और सभी को प्यारे होते है। इनके लिए जीवन में सफल होने के लिए छोटा रास्ता कभी नहीं अपनाते। ये कोई महत्वपूर्ण कार्य करते हुए पाए जाते है। लोग इनके साथ सहानुभूति पूर्ण व्यवहार नहीं करते। ये अपने आपको अकेला एवं दुखी महसूस करते रहते है। इनको बाहरी प्रेम प्रदर्शन की आदत नहीं होती इसलिए लोग इन्हे शुष्क मान लेते है और कठोर प्रवर्ति का समझने लगते है। परन्तु वास्तव में ये ऐसे नहीं होते है। ये उच्च महत्वाकांक्षी होते है। अपने कार्य को पूर्ण करने के लिए कोई भी बलिदान देना पड़े तो देते है।

अंक 8 दो भागो में बंटा हुआ होता है इसी प्रकार जातक के जीवन में भी या तो अच्छा होता है या बहुत ख़राब होता है। ये प्रायः कठिन परिश्रम करके ही देरी से जीवन में सफलता प्राप्त करते है।

यह गृह वायु तत्व प्रधानता वाला गृह है। यह अंक कार्य सम्मपन्ता को दर्शाता है। यह कठोर अनुशासन प्रिय गृह है। किसी को आकाश की ऊंचाइयों को प्रदान करता है तो किसी को बर्बाद भी यही करता है। इस अंक के जातक प्रसन्न होने पर कवच बन कर खड़े हो जाते है और अप्रशन्न होने पर चाणक्य की तरह किसी की जड़ो को नष्ट करने का प्रयत्न करते है। इनको कर्मयोगी की संज्ञा दी जा दी जा सकती है। ये भूत की तरह किसी भी काम में जुट जाते है। इनका रास्ता अत्यंत असाधारण बाधाएं रोकती है। ये अन्तर्मुखी होते है एवं दिखावा नहीं करते। ये गंभीर प्रवर्ति के होते है। यह भी सच है कि संघर्ष और कठिनाइयां इस अंक से जुडी हुई है। यह अंक एक बड़ा ही शश्क्त अंक है और इस मूलांक वालो को उनके प्रयत्नों का ऐसा शानदार प्रतिफल दिलाता है जो अन्य कोई अंक नहीं दिला सकता। ये लोग अपने परिवार समाज संस्थान और देश के प्रति पूर्ण समर्पण का भाव रखते है तथा उनपर अपने प्राण भी न्योछावर कर देते है। ये लोग समय से आगे चलते है।

ये लोग अपने मन का भेद किसी को प्रकट नहीं करते है। उनके अत्यंत नजदीकी लोग भी इन्हे समझ नहीं पते है। इनके जीवन काल में हर हर बात एकाएक धूमकेतु कि तरह एकाएक होती है। ऐसे -ऐसे कहर इन पर टूटते है कि कोई और हो तो वो टूट जाये पर ये ही है जो निर्लिप्त भाव से लाभ हानि को सैम दृस्टि से स्वीकार करते हुए पुनः नवनिर्माण आरम्भ कर देते है।

ये या तो बुलंदियों पर या धूल में नजर आते है। यारों के यार और दुश्मनो के दुश्मन होते है। अंदर से सेवा भावी और दयालु होते है। लोग इनके बारे में क्या सोचते है इन्हे कोई फर्क नहीं पड़ता धार्मिक प्रवर्ति के साथ साथ ये कई बार अंधविश्वाशी भी हो जाते है। इन्हे पग - पग पर विपत्तियों, नाकामियों और अपमान का सामना करना पड़ता है। पीठ पीछे लोग इनकी तारीफ ही करते मिलेंगे

इनके चरित्र का एक दुखद पहलु यह है कि इनको कोई बुरिलत या वयसन अवश्य होता है। चाहे वह मध् पान हो, ड्रग्स हो या वैश्यागमन। इनके जीवन में मौज मस्ती, हँसी मजाक के पल काम ही आते है। ये लोग भौतिकता को अधिक महत्त्व देते है। धन कमाना इनका मुख्य लक्ष्य होता है। इनमे कुशल प्रबंधक के गुण होते है। इन्हे 1, 3, और 6 नंबर कि गली घरो या प्रकोष्ठो में रहना चाहिए। 4 और 8 नम्बरों से बचे तो इनके लिए उचित होगा।

इससे रोग, शत्रुभाव, आयु मृत्यु जीवन दुखों व् अभावों की स्तिथि निर्मित होती है अशुभ शनि होने से मनुष्य के जीवन में आकस्मिक विप्पति, निम्न स्तर की सेवाएं, आश्रयहीनता, दरिद्रता, चौरी का भय, दुर्घटना में हानि, कुष्ठोग, लकवा, दमा, पेट की बीमारियां नेत्र दोष और जीवन में रुकावटे उत्पन्न होती है। शनि के शुभ प्रभाव से लम्बी आयु, चिंतन सकती में वृद्धि, ऐस्वर्य, ख्याति, तथा जीवन में स्थिरता और संतोष की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त अन्य बहुत से प्रतिकूल प्रभाव देखने को मिलते है। शनि का विशेष फल जीवन के आरम्भ या अंत में प्राप्त होता है। यह गृह व्यक्ति के पूर्व जनम के

कर्मो का सूचक भी है। शनिदेव उसी अनुरूप व्यक्ति को दण्डित एवं प्रतिफल देते है।
शनि की शांति एवं प्रशन्ता के लिए ब्राह्मण को तिल, उड़द, लोहा, तेल, कला वस्त्र, नीलम, जूता, आदि दान करना चाहिए। शनिदेव का रत्न नीलम होता है।

1.3 जीवनांक - 6

यह ह्रः शुक्र गृह से प्रभावित होता है। भौतिकता, सौंदर्य व् काम शक्ति का प्रतिक है।
स्वाभाव व् वय्क्तितत्व:- हमेशा नए व् रुचिपूर्ण तरीके से कपडे पहनना पसंद करता है। अवयवस्थ, गंदगी, कुरूपता, फूहड़ता पसंद नहीं है। सौंदर्य प्रेमी होते है। सुख शांति से जीवन यापन करते है। कला प्रेमी होते है एवं कलात्मक वस्तुओ पशर धन खर्च करते है। विपरीत वर्ग से मित्रता रहती है। आकर्षक वय्क्तितत्व के स्वामी होते है। वाणी की सौम्यता एवं मधुरता से सभी को प्रभावित करते है। अत्यधिक लोकप्रिय होते है और झगड़ो से दूर भागते है।
मिलान सारिता के चलते समाज के सभी वर्गों के प्रिय पात्र बने रहते है। दुसरो की बात जान जाते है और अपनी बात जल्दी किसी को नहीं बताते है। ईर्षालु प्रवर्ति होती है जिस वजह से व्यर्थ हानि उठानी पड़ जाती है।अपने जिद्दी स्वाभाव के कारण आप व्यर्थ की परेशानी में रहते है।
ज्यादा सोच विचार नहीं करते है और भोग विलास व् उत्तावलेपन के कारण आपकी कार्य क्षमता काम हो जाती है। श्रृंगार और दिखावे पर अधिक खर्च करते है। कर्ज ले कर भी ऐसे कार्यो पर खर्च करते है। दोस्तों द्वारा ठगे जाते है क्योंकि आप दोस्तों से घिरे रहते है। झूटी प्रसंशा के द्वारा सभी अपना मतलब आपसे पूरा करवा लेते है। गृहस्त सामान्य बीतता है। घर की साडी सुख सुविधाएँ जुटाते है परन्तु बुरी सांगत के कारण परिवार के साथ ज्यादा समय नहीं दे पते है। संघर्ष से घबरा निराश हो जाते है। विपरीत लिंग से नुकशान संभव होता है।
आपके लिए 24 वा साल भागयोग्य के लिए उत्तम है आपके जीवन का 6, 15, आदि वर्ष महत्व पूर्ण होंगे व् सफलता मिलेगी - भूतकाल के अनुभव से भी ये जान सकते है। आपके लिए 4, 5, 8 अनुकूल है अतः ये वर्ष भी महत्वपूर्ण होंगे। यदि 6, 15, 24, को 13 मई से 14 जून जून की अवधी में शुक्रवार 6,15,और 24 को पड़े तो अति शुभ होंगे।
आपका स्वास्थ्य हमेशा आपका साथ देगा परन्तु शुक्र निर्बल होने पर नेत्र रोग, मुखरोग, मधुमेह, वातविकार रोगो का खतरा बढ़ जाता नासा न करें, गरिष्ठ भोजन से दूर रह। विटामिन ए एवं विटामिन डी युक्त भोजन ले
सौंदर्य उपासक होने के कारण विपरीत लिंग के वयक्ति से जल्दी आकर्षित होंगे। प्रेम प्रसंगो में असफल होंगे। क्योंकि एक से अधिक प्रेम प्रसंग होते है। वैवाहिक जीवन साधारण होता है। आपके 4, 5, 8 से अच्छे 3, 4, 9, से साधारण तथा 1, 2 से कभी नहीं बनेगी।
अत्यधिक श्रम न करे, मानसिक काम ज्यादा करे। सदैव जागरूक व् सतर्क रहे। कल्पनाओ में जीवन नहीं जी सकते। दुसरो पर अत्यधिक विश्वास न करे। आलस्य व् अत्यधिक भोग विलास को त्यागे। जल्दबाजी में कोई निर्णय व् कार्य न करे। ईर्ष्या, चटोरेपन व् पारिवारिक उदासीनता से बचे। आपके लिए सदैव नीला रंग अनुकूल है। हमेशा साथ में सफ़ेद रुमाल रखे। सफ़ेद वस्तुओ का दान करे 1, 2, अंको से बचे। शुक्रवार का व्रत करे।

1.4 भाग्यांक 6/33

अंक 6 के व्यक्ति रूप में, सद्भाव में और एकता में विश्वास रखते है। आपकी करुणा और सेवा की इच्छा आपके जीवन में एक प्रेरक शक्ति है आप अक्सर सूंदर चीजों के प्रति आकर्षित होते है। आपको सबसे ज्यादा प्यार करने वाला भी कहा जा सकता है।
आपके पास सुंदरता के लिए एक आँख है और रचनात्मक स्वाभाव है आप एक टीम में काम करना पसंद करेंगे आप एक करियर के लिए बहुत लम्बे समय तक समर्पित रहेंगे।
एक परामर्शदाता, नर्स, परिचारिका, पुनर्वसन, पेशेवर, बालरोग विशेष्ज्ञ यहाँ तक कि वकील के रूप में जीवन के लिए उस करुणा का उपयोग करे। सुंदरता के लिए आपकी आँख फैशन उद्योग ग्राफिक डिजाइन और आंतरिक सज्जा के लिए एकदम सही है या अपना समय एक धर्मार्थ संगठन, एक गैर सरकारी संगठन या सामाजिक कार्य के लिए समर्पित करके अपना प्यार फ़ैलाने का विकल्प चुन सकते है। आप अपने वय्वसाय में भी सफल वय्वसाय के स्वामी होंगे।
अंक 6 विस्वास, समर्पण, भरोसेमंद मित्र, विचार कुशलता, भाव प्रवीणता, परामर्श तथा विवेकी वयक्ति का प्रतिनिधि है। ये जज्बाती भी होते है। व्यवहार कुशल होते हैं। वह सब समझता है और लोग इस भृम में रहते है इनको कुछ समझ नहीं आया। हरी हुई बाजी जितना इनसे कोई सीखे। ये लोग साझेदारी में व्यापर करें तो विशेष सफल होंगे। दोस्तों में खासे लोकप्रिय होते है। ये अपने विचारो को दुसरो पर थोपने की चेस्टा करते है बल्कि जबरदस्ती भी करने है। ख़र्चीले स्व्भाव के कारण अनापशनाप खर्च करते है। बदइंतजामी के कारण आर्थिक स्तिथि कमजोर हो जाती है।
भाग्यांक 6 के लोग आभुषण, सजावट, ट्रेवल एजेंसी, होटल, हेल्थ क्लब, सौंदर्य प्रशाधन सामग्री, आंतरिक सज्जा, थिएटर, आदि के क्षेत्रों में पर्याप्त उन्नति कर सकते है। इन्हे अपने वित्तीय पहलु की और उचित ध्यान देना चाहिए। आमदनी के अनुसार खर्च करना चाहिए
मास्टर नंबर 33 - आप एक मास्टर नंबर 33 के स्वामी है जो आप को बुद्धिमान बनाता है आपके लिए कोई भी कार्य करना मुश्किल नहीं होगा।
आपके अंदर समय से पहले की सोच रहेगी लेकिन इसको अमल में कैसे लाया जाये इसका आभाव बना रहेगा। आप किसी भी क्षेत्र में कामयाब हो सकते है।

1.5 मूलांक भाग्यांक का समन्वय:- 8:6

शनि और शुक्र का योग बहुत अच्छा है। कर्म करो तो लक्ष्मी जरूर मिलेगी यहाँ कर्म विलासिता और बुद्धि का योग बनाता है। कामयाब जरूर होते है। काम वाली जगह पर गलत हरकत न करें जिम्मेदारी से न भागें सपनो के पीछे न भागे। कार्य में रुकावट और रिस्तो में टूट करते है। जीवन का लुत्फ़ उठायें। सहकर्मी, स्त्री, को भी मान दे। अपने मन की जिद्द को थोड़ा छोड़े।

1.6 "लोशु ग्रिड का अवलोकन

मेन्टल प्लेन 33% होने की वजह से बुद्धि का प्रयोग काम हो रहा है। जोश तो है पर होश नहीं है।
मेन्टल प्लेन में सिर्फ अंक 9 ही उपलब्ध है। ऐसे जातक धार्मिक प्रवर्ति के होते है और गुस्सा भी जल्दी आता है। जरूरत मंदो की मदद भी करने के लिए तत्पर रहते है।
हार्ट प्लेन 66% होने से दिल से काम लेते है पर अपनी भावनाओ को खुल कर लोगों के सामने नहीं रख पा रहे है।
इस प्लेन में आपका अंक 5 नहीं है तो ऐसे जातक भाग्यवान तो हो सकते है लेकिन भावनात्मक दृस्टि से थोड़े कमजोर हो जाते है
प्रैक्टिकल प्लेन 100% है इसलिए आप व्यवहारिक है एवं तर्कसंगत बात करना आपको पसंन्द है।
यह प्लेन आपकी 100% है। आप पूर्ण रूप से व्यवहारिक इंसान है और हर काम को अच्छी तरह से तोलमोल कर, अपने लाभ हानि देख

कर करने में विश्वास रखते है। रसिक किस्म के इंसान आप है। अपने जीवन में किसी भी काम में पूर्ण शक्तियो को पाना पसंद करते है।
विज़न प्लेन 66% आप दूर की दृस्टि तो रखते है परन्तु नयी सोच का आभाव रहता है।
आपका विज़न तो आपको बहुत दूर की दिखायेगा लेकिन नई सोच का आभाव बना रहेगा इसलिए मन में कहीं न कहीं खीज उठती रहेगी।
विल पावर प्लेन 66% संकल्प शक्ति के लिए जिस बैलेंस की जरूरत है वो नहीं है। इसलिए जीवन में कष्ट आने पर जल्दी हौसला छोड़ देने की प्रवर्ति हो शक्ति है।
विल पावर प्लेन में आपकी प्रवर्ति हमेशा एक लीडर बनने की रहेगी और आपके लिए अपनी इज्जत सर्वपरि होगी।
एक्शन प्लेन 66% किसी कार्य को करने के लिए जो ताकत चाहिए वो आपके पास है लेकिन सारा काम ताकत से नहीं बनता उसमे अपने दिल की ताकत को भी डालना पड़ता है। वही दिल की ताकत इसमें उपलब्ध नहीं है।
इसमें आपको हमेशा विपरीत लिंग के तरफ आकर्षण रहेगा।

1.7 अंक जो लोशु ग्रिड में नहीं है और उनका प्रभाव

अंक 2, 4, एवं 5 लोशु ग्रिड में नहीं आ रहे है। इन अंको का आपके लोशु ग्रिड में न होना निम्न प्रभाव पैदा करता है।

अंक 2: आपकी शादी में बाधाएं उत्त्पन्न हो शक्ति है, आपके जीवन में खुशियों की कमी रह सकती है आपको लगेगा कि सब कुछ होते हुए भी आप खुशी महसूस नहीं कर पा रहे है। आपको जल्दी गुस्सा भी आने लगेगा। इन सभी अभावों के साथ आप भावनात्मक दृस्टि से भावुक किस्म के इंसान भी अवश्य होंगे।

अंक 4: लोशुगृड़ में अंक 4 का न होना यह दर्शाता है कि आप अपने रोजमर्रा के कामो में अनुसाशन नहीं रखते है एवं कोई अग्रिम योजना भी नहीं बना पते है। जीवन में नई सोच और नए विचार नहीं होने कि वजह से किसी तरह का प्रोत्साहन भी नहीं मिलता है। आलस्य आपको घेरे रहता है। जीवन में कर्रिएर भी कभी सेट नहीं हो पाता है। इसकी वजह से आप धन का भी संचय नहीं कर पाते है।

अंक 5: अंक 5 का न होना आपके जीवन में यह दर्शाता है कि आपमें किसी काम को करने कि शक्ति इतनी मजबूत नहीं होगी एवं जीवन में स्थिरता का भी आभाव बना रहेगा। आप अपने जीवन में अपने कामो और अन्य पहलुओं के बिच तालमेल भी ठीक से नहीं बन पा रहे है। आप अपने विचारो को व् अपने मन के भावों को दुषरे लोगों तक ठीक ढंग से समझा भी नहीं पा रहे हो।

1.8 अंकों का लोशु ग्रिड में एक से अधिक बार आना

आपके लोशु ग्रिड में जो अंक एक बार से अधिक बार आ रहे है उनका भी अपना एक अलग प्रभाव बनता है। हर अंक का अपना एक कम्पन्न होता है। फिर अगर एक ही अंक एक बार से अधिक बार आएगा तो उसका अपने अलग प्रभाव बन जाता है। हम उसको देखते है इस लोशु ग्रिड में क्या प्रभाव बनता है। जो अंक एक बार से अधिक बार आ रहे है वे अंक है 1 एवं 6।
आपके लोशु ग्रिड में अंक 1, 2 बार आ रहा है इसका मतलब आप संवादशील है और अंक 6, 3 बार आ रहा है तो यह दर्शाता है कि आपको क्रोध जल्दी आ जाता है।

1.9 मूल्यांकन

उपरोक्त जन्म दिन के अंकविज्ञान पर आधारित लोशु-ग्रिड के विस्तृत अध्यन्न के पश्चात जो तथ्य सामने आये वो इस प्रकार से है।

- जातक का मूलांक 8 है जो अपने आप में एक सख्त अंक है लेकिन यह कहीं न कहीं उसको अकेला भी बनाता है और अपने मन कि बात भी दूसरों को जाहिर करने से रोकता है।
- जातक का भाग्यांक 6 है जो विलासिता को दर्शाता है। अनैतिक तरीको से विलासिता को प्राप्त करना अंक 8 का स्वाभाव नहीं है।
- जातक के लोशु ग्रिड में जो अंक नहीं आ रहे है वो है 2, 4, एवं 5, इन अंको का जातक के जीवन पर गहरा असर डालते हुए देखे जा रहे है जिनका विस्तृत विवरण ऊपर के प्रिस्टो पर दिया गया है।
- जातक के लोशु - ग्रिड में जो अंक एक बार से अधिक बार आ रहे है वो अंक है 1, एवं 6, इनका प्रभाव भी हम ऊपर देख चुके है।

इस उदाहरण में हम देख रहे है कि अंक 2 जो चन्द्रमा से संचालित होता है वह अंक 8 के साथ ठीक से समन्वय नहीं बना पा रह है और जातक को अपने कठिन परिश्रम को करने में भी बाधाएं पंहुचा रहा है। अंक 4, जो एक मजबूत अंक होने के साथ राहु गृह से संचालित होता है। यह गृह या अंक जातक को अपने मुकाम पर पहुंचने में मदद करता है वह मदद इस जातक को उपलब्ध नहीं हो रही है। जातक व्यवहारिक है, जोशीला भी है लेकिन नई सोच या जो जीवन को सफल बनाने में जुगाड़ चाहिए वो राहु कि तरफ से नहीं मिल रहा है। इसकी अतिरिक्त जातक जोशीला भी है, लीडर के गुण भी है लेकिन अंक 5, जो बुध गृह से संचालित होता है उसका योगदान जातक को नहीं प्राप्त हो रहा है।
जातक अपने जीवन और अन्य पहलुओं का ठीक से समन्वय नहीं बना पा रहा है और अपने आपको सही तरीके से व्यक्त भी नहीं कर पा रहा है।
हम ये भी अच्छी तरह से देख पा रहे है कि जातक संवादशील होते हुआ भी बुध गृह या अंक 5 कि वजह से अपने मन कि बात कह पाने को असमर्थ है। जातक के लोशु-ग्रिड में अंक 6 का आना यह बताता है कि जातक अति विलासिता कि तरफ चला गया है और अंक 8 या गृह शनि को अनैतिकता से अर्जित किया गया कोई भी अर्जित साधन मंजूर नहीं है। जातक के पास एक 6 का अधिकता में होना भी यह दर्शाता है कि वह अधिक क्रोधी सवभाव का हो गया है और अत्यधिक धन का भी फिजूलखर्च किया होगा। जब धन का अत्यधिक खर्च करने के बाद और अपने कर्रिएर का कोई स्थाई समाधान नहीं होने से जातक में विभिन्न तरह के विचार उत्त्पन्न होने लग गए होंगे। जातक के पास जब धन कि कमी हो गयी तब उसके दोस्त भी किनारा करने लग गए होंगे। जब मनुष्य के जीवन में इस तरह के हालत उत्त्पन्न हो जाते है तो उसको अवसाद में जाने के कई कारन मिल जाते है और वो अपने आप को अकेला महसूस करने लगता है। इस तरह कि स्तिथि को अगर लम्बे समय तक सहन किया जाये तो कठोर से कठोर व्यक्ति भी टूट जाता है और निरास हो कर अपने जीवन में सब कुछ खो जाने का भय उसे और भी भयावह बना देता है और वह अपने आप को भी नुकसान पहुंचाने से नहीं कतराता।

2. उपाय

उपरोक्त उदाहरण में यह ज्ञात होता है कि जातक को अंक 1 (सूर्य), अंक 2 (चन्द्रमा), अंक 4 (राहु), अंक 5 (बुध) और अंक 6 (शुक्र) का उपाय करना चाहिए। जो अंक "लोशु ग्रिड में नहीं आ रहे है उनको ग्रहण करने का उपाय एवं जो अंक बार बार आ रहे है उनके प्रभाव को कम करने का उपाय करना चाहिए।
अंकविज्ञान के अनुसार हम इन सभी उपायों पर विचार करेंगे।
अंक 2 जो जातक के लोशु ग्रिड से अनुपस्तिथ है तो उसको अगर ग्रहण करने के उपाय करते है तो अंक 2 का दुष्प्रभाव समाप्त हो

जायेगा। इस गृह के उपाय के लिए जातक को अपनी माँ की इज्जत करनी चाहिए, पानी की बर्बादी को रोकना चाहिए, पानी पीते समय अच्छी तरंगो को आकर्षित करना चाहिए। सोमवार को जातक को सफ़ेद रंगों को धारण करना चाहिए। कभी भी सफ़ेद रंग की वस्तु को दान नहीं करना चाहिए।

अंक 4 जो जातक के लोशु ग्रिड में अनुपस्थित है तो उसके प्रभाव को ग्रहण करने के उपाय करते है तो अंक 4 के दुष्प्रभाव समाप्त हो जायेगा। इस अंक के उपाय के लिए जातक को अपनी जेब में एक पेंसिल का सिक्का हमेशा रखना चाहिए, देवी सरस्वती की पूजा करनी चाहिए और धूम्रपान का सेवन नहीं करना चाहिए।

अंक 5 जो जातक के लोशु ग्रिड में अनुपस्थित है तो उसके प्रभाव को ग्रहण करने के उपाय करते तो अंक 5 के दुष्प्रभाव समाप्त हो जायेंगे। इस अंक के उपाय के लिए जातक को भगवान गणेश की आराधना करनी चाहिए, अपने आप को प्रकृति के साथ जोड़ना चाहिए, थोड़े समय नंगे पाँव हरी घास में टहलना चाहिए, अंकुरित अनाज के सेवन करना चाहिए, बुधवार को जातक को हरे रंग का वस्त्र धारण करना चाहिए और अपने हाथ में हरे रंग का क्रिस्टल का बैंड भी पहनना चाहिए।

अंक 1 जो जातक के लोशु ग्रिड में दो बार आ रहा है तो उसके प्रभाव को कम करने के लिए किये गए उपायों से इस गृह के प्रभाव को कम किया जा सकता है। सूर्य गृह के प्रभाव को कम करने के लिए सूर्य को जल अर्पण करे और ताम्बे के बर्तन का कभी भी इस्तेमाल न करे।

अंक 6 जो जातक के लोशु ग्रिड में 3 बार आ रहा है उसके प्रभाव को कम करने के लिए जो उपाय है उनको करने से इस गृह के प्रभाव को कम किया जा सकता है। जातक को देवी लक्ष्मी की आराधना करनी चाहिए, नहाते समय शुक्रवार को पानी में गुलाब जल को मिला कर नहाना चाहिए, महिलाओ के बारे में अप्शब्द नहीं बोलने चाहिए और अपनी पत्नी का सम्मान करना चाहिए।

जातक का मूलांक 8 है इसलिए उसको विशेष कर उसके आयु के अंक 1 एवं 2 से सावधान रहना चाहिए। उसको अपने आयु के 19, 20, 28, 29, 37, 38, 46, 47, 55, 56, 64, 65, 73 एवं 74 वे वर्ष से होने वाले नुक्सान से सावधान रहना चाहि। जातक को इन वर्षो में विशेष कर सेहत से संबंधित कोई भी कठिनाई आ सकती है और उस समय उपरोक्त उपायों को करने से कठिनाइयों से बचाव किया जा सकता है।

अंत में मैं इस नतीजे पर पहुंच पाया हु कि मनुष्य के जीवन पर उसके अंको का कितना गहरा प्रभाव पड़ता है चाहे वो अनुपस्थित हो या बार बार आ रहे हो। जो अंक अनुपस्थित है उनके प्रभाव् को ग्रहण करने के उपाय और जो अंक बार बार आ रहे है उनके प्रभाव को कम करने में उपाय करने से प्रभाव को कम किया जा सकता है। जातक को अपने मूलांक के हिसाब से उसके दुश्मन अंको के आयु वर्ष से खाश ध्यान रखना चाहिए। इस प्रकार हम अंकविज्ञान कि मदद से मानव को भावनात्मक असंतुलन का शिकार होने से बचा भी सकते है और उसको पहले से भी आगाह कर सकते है कि कब कब उसे इस का ध्यान रखने कि जरूरत है। इस उदाहरण में जातक बड़े शहर में रहता है इसका भी असर उसके जीवन चक्र पर पड़ता है क्योकि बड़े शहर में जीवन यापन का तरीका अन्य शहरो के वनिस्पत दबाव ज्यादा रहता है तो उसको ज्यादा ध्यान रखने कि भी जरूरत पर सकती है।

3. शीर्षक

वर्तमान समय के अनुसार पाइथोगोरस एवं चाल्डियन पद्धति के अनुसार जयादा असरदार और आसान तरीको से अंक विज्ञानं को देखा जा रहा है। दोनों ही पद्धतियों में अंक विज्ञानं को अंको एवं ग्रहो के आपसी सम्भन्धों को समनवय बताया गया है और इन अंको एवं ग्रहो को मानव जाति पर पड़ने वाले प्रभावों को भी बताया गया है। इन पद्धतियों में अंको और ग्रहो को उनके एक विशेष प्रकार के कम्पन के आधार पर संभंधित कर मानव के जीवन पर पड़ने वाले विशेष प्रभाव को उल्लेखित किया गया है। सभी मनुष्यो पर उनके एक या एक से अधिक ग्रहो को प्रभाव विशेष तौर पर पाया जाता है उन्ही प्रभाओं का और अंको के प्रभाओं को अध्यन करने से अंको एवं ग्रहो का सम्भन्ध बनाया गया है।

मनुष्य का जन्म जिस तारीख को होता है उसका एक अंक बनाया जाता है और उस अंक का सम्बन्ध एक विशेष गृह से दर्शाया गया है, वही गृह उस मनुष्या के जीवन पर विशेष प्रभाव रखता है। वह विशेष गृह उस व्यक्ति के जीवन पर जीवन भर अपना प्रभाव अनुकूल या प्रतिकूल डालता रहता है। उपरोक्त पद्धतियों में हमे यह भी बताया गया है कि ग्रहो को मनुस्य के जीवन पर उसका प्रभाव अनुकूल परिस्थितियों में अनुकूल और प्रतिकूल परिस्तिथियों में प्रभाव प्रतिकूल भी होता है। अंक विज्ञानं में जब ग्रहो का प्रभाव अनुकूल होता है तो मनुष्य अपने कार्यो को भी अपने विकाश को आगे ले जाने के लायक करता है और प्रतिकूल प्रभाव होने पर मनुष्य अपने कार्यो को भी गलत दिशा कि तरफ मोड़ लेता है। अतः हमे पता चलता है कि हमारे जीवन पर कब ग्रहो का प्रभाव अनुकूल है और कब प्रतिकूल है।

अंक विज्ञानं के साहित्य में यह भी भली भांति दर्शाया गया कि किस गृह का किस गृह से मैत्री वाला सम्भन्ध है और किस गृह का किस गृह के साथ सत्रु जैसा सम्भन्ध है। ब्रह्माण्ड में प्राचीनकाल से नौ ग्रहो का वर्णन है उनका आपस में मैत्री व शत्रु वत सम्भन्ध का भी वर्णन पाया जाता है। उसी प्रकार के सम्बन्धो का वर्णन अंक विज्ञानं कि सभी पद्धतियों में भी बताया गया है। यही मैत्री य शत्रुवत प्रभाव मनुष्य के जीवन पर जीवन भर रहता है।

मूलतः मनुष्य के जीवन पर दो ग्रहो का प्रभाव विशेष तोर पर देखा गया है जो उसके मूलांक और भाग्यांक के अंको से सम्बंधित गृह होते है। मूलांक मनुष्य के जनम लेने कि तारीख का एक अंक होता है और उस अंक का गृह उस का अधिपति होता है। भाग्यांक मनुष्य के जन्म की पूरी तारीख (तारीख + महीना + वर्ष) का एक अंक होता है और उस अंक का विशेष गृह उसके भाग्य का अधिपति होता है जो हमें यह भी बताता है कि मनुष्य अपने जीवन काल में किस प्रकार का व्यव्हार अपने जीवन को आगे ले जाने में करेगा।

जब मनुष्य के जीवन पर विशेष तौर दो ग्रहो का प्रभाव देखा जाता है तो वे भी अपना मित्र या शत्रु वत व्यव्हार करते हुआ पाए जाते है। आहार दोना ग्रहो का मित्र वाला सम्भन्ध हो तो मनुष्य भलीभांति फलता फूलता रहता है और जीवन भर आगे बढ़ता रहता है और अगर उन ग्रहो का सवभाव शत्रुवत होगा तो मनुष्य के जीवन पर भी वैसा भी प्रभाव दिखाते रहेंगे यानि मनुष्य जीवन भर कठिनाईयों का सामना करता रहेगा और जीवन भर अपने कार्यो को सफलता पूर्वक करने में अक्षम रहेगा। इस तरह के सभी प्रभावों को हम अंक विज्ञानं कि उपरोक्त पद्धतियों में भलीभांति अध्यन कर चुके है।

मनुष्य के जीवन पर हमारे ब्रह्माण्ड के सभी नौ ग्रहो का प्रभाव पड़ता है। कभी किसी गृह का काम तो कभी किसी गृह का का अधिक, किन्तु उपरोक्त पंक्तियों में यहाँ संक्षिप्त में मूलतः पड़ने वाले दो ग्रहो का जिक्र किया गया है।

अंक विज्ञानं में हमें यह भी बताया गया है कि अगर किसी गृह का मनुष्य पर पररिकूल प्रभाव हो तो उस स्थिति में कुछ उपाय करने से प्रभाव को अपने लिया अनुकूल प्रभाव में परिवर्तित किया जा सकता है। हमारे जीवन पर ग्रहो के अनुकूल प्रभावों के अलावा प्रतिकूल प्रभाओं को भी अनुकूल बनाने के उपायों को हम अंक विज्ञानं में भलीभांति अध्यन कर चुके है और इसका असर भी पड़ता है यह भी हम सभी भलीभांति जानते है। उदाहरण के तौर पर यहाँ सिर्फ कुछ

उपायों का वर्णन किया जा रहा है जैसे ग्रहो से संभंधित रत्न धारण करना, ग्रहो से संभंधित रंग का इस्तेमाल करना या उनके विशेष दिन को व्रत रखना या उनके विशेष रंग कि वास्तु को जरुरत मंदो को दान देना ये सभी उपाय हमारे जीवन पर एक विशेष गृह के प्रभाव को प्रतिकूल से अनुकूल प्रभाव में बदलने में सक्षम है।

अंक विज्ञानं के अनुसार मनुष्य के जीवन पर जब सभी गृह अपना प्रभाव डालते है और उसके जीवन के प्रत्येक पहलु पर डालते हुआ पाए जाते है । गृह या अंक मनुष्य के स्वाभाव, व्यक्तितत्व, व्यवसाय एवं सेहत पर भी अपना प्रभाव डालते रहते है। व्यक्ति अपने स्वभाव वय्क्तितत्व, व्यवसाय एवं सेहत को ठीक करने के लिए प्रतिकूल स्थिति में कुछ उपाय करके उनको अपने अनुकूल प्रस्तिथियो में बदल लेता है। "प्रस्तावित शोध " में भी हम यही जानने की कोशिस करेंगे कि जब मनुष्य के अंदर मानसिक असंतुलन कि स्तिथि आती है तो उस समय या स्तिथि में किस गृह का प्रभाव अनुकूल है और किस गृह का प्रभाव प्रतिकूल है और क्या उसका उपाय भी संभव है ?

अतः अंकविज्ञान की मदद से इस शोध में यह ज्ञात हुआ है की अगर किसी मनुष्य को किसी प्रकार का मानशिक विकार पैदा होता है तो उस पर किसी गृह का या अंक का प्रभाव प्रतिकूल हो रहा होता है। हम अगर उस व्यक्ति को समय रहते अगर उस प्रतिकूल प्रभाव को कम कर दे तो वह उस विकार से बच सकता है। अगर किसी गृह का प्रभाव उस व्यक्ति को नहीं मिल रहा है और उस वजह से वह अगर मानशिक विकार का शिकार होता है तो अमुक गृह का प्रभाव पाने का उपाय बता कर उसे मानशिक विकार से बचाया जा सकता है। यह एक पूर्णतया वैज्ञानिक तरीका होगा।

4. सन्दर्भ सूचि

1. द कम्प्लीट बुक ऑफ़ नुमेरोलॉजी
2. बाय- डेविड ए फिलिप्स पीएचडी एडिशन २०००
3. श्री महर्षि कॉलेज ऑफ़ वैदिक एस्ट्रोलॉजी
4. गुरुकुल मॉडूल 1, 2, 3, 4, 5, 6, एडिशन 2023
5. वोन ही किम, सुंग जी चो
6. वॉल्यूम 20 नंबर 3 ए पेज 1659-1666
7. डॉक्टर शैफाली बंसल - प्रोफेसर श्री महर्षि कॉलेज ऑफ़ वैदिक ऑस्ट्रोलॉज।